Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति

Dr. Seema Devi*

M.A., M.Phil, Ph.D., Assistant Professor Department of Post Graduate, Madhav University Pintuwara, Sirohi, Rajasthan

सार – *प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएं, उपन्यास, कहानियां नाटक, एंकाकी, महाकाव्य, खण्डकाव्य अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्महत्या आदि का सृजन हुआ है प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी श्लाघनीय है इन साहिंत्यकारों ने अपनी रचनाओ द्वारा नीति-मल्य, मिथक, इतिहास सभ्यता के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा है। हिंदी को प्रवाहित रखा जिंदा रखा है। इन साहित्यकारों में प्रमुख नाम है- साहित्यकार हरिशंकर आदेश उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हुई है। वे 1966 से 1976ई. तक वेस्ट इंडिज में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थे। वेस्ट इंडिज के कार्यकाल के दरमियान उन्होने अवलोकन किया कि चर्च द्वारा वहां बसे हुए भारतीयों जिन्हें वर्षो पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर ले गए थे पर धर्मातंर के लिये दवाब डाला जा रहा है। महाकवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होने इसे रोकने के लिये नामकरण से लेकर मृत्यु संस्कारादि धार्मिक कार्य के लिये वहां के निवासियो को प्रशिक्षित किया। आदेश जी के कारण वहां के लोगो को राहत मिली। सुरक्षा महसूस हुई इसलिये उन्हें उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी किसी ने भारत लौटने नही दिया। लगभग 50 वर्ष हो गए। वे वहीं के होकर रहे हैं। उन्होने वेस्ट इंडिज में भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना की हैं। इस संस्था द्वारा उन्होंने बी.ए. स्तर के हिंदी पाठयक्रम सीखने का प्रावधान किया हैं। इतना ही नही भारतीय आभिजात्य संगीत का पाठयक्रम भी शुरू कर रखा हैं। उन्होने भारत और हिंदी संबंधी गीत लिखे है। उन गीतों तथा रागों का अध्यापन वे स्वयं करते रहें है उनकी हिंदी की तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशिक हुई है। उनमें महाकाव्य, खंडकाव्य, भगवतगीता का हिन्दी और अंग्रेजी पद्यानुवाद तीस नाटक, एंकाकी जीवनियां आदि है। संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होने भारतीयता को जिंदा रखा है। "हिंदी" के प्रचार प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणी हैं, वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं, जैसे विश्व इनकी कहानियां अनुभवों की प्रस्तुति हैं। वे पाठकों के साथ संवाद स्थापित करती है।*

----------X----------

प्रस्तावना

उषाराजे सक्सेना विख्यात प्रवासी हिंदी साहित्यकार है। इंग्लैंड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिंदी साहित्यकारों में इन्होने काफी सक्रियता रखी हैं। इनके साहित्य में काफी सक्रियता के साथ-साथ इनके साहित्य में भारत भारतीय संस्कृति सभ्यता और भाषा के प्रति हर तरह के अनुभव तथा विचार प्रकट होते दिखाई देते हैं। उनके विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में ये छपती रही हैं। इनके दो कविता संग्रह, एक कहानी संकलन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। वे ब्रिटेन की पुरवाई नाम पत्रिका की संपादक है इनके लेखन में आशा की संभावना नजर आती है। इन्होने अपने समय तथा समाज की विडम्बना और और सत्य को अपने लेखन में अभिव्यक्ति करने की कोशिश की है।

उषा वर्मा यॉक विश्वविद्यालय में अनेक वर्षो से हिंदी पढाती है। उनके कविता संग्रह, कहानी संग्रह, अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में ये काफी लिखती रही है समीक्षकों का मत रहा है, कि इनकी कहानियों द्वारा संवेदना, सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार व्यक्त होता रहा है अधिकतर पश्चिम समाज की विसंगती इनके लेखन द्वारा अभिव्यक्त हुई हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार अलका शर्मा वाईस ऑफ़ अमेरिका में कुछ समय कार्यरत रही थी। बाद में लंदन में बी.बी.सी. हिंदी सेवा की अध्यक्ष हैं। इनके लेखन में भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना दिखाई देती है। अर्चना पैन्यली डेन्मार्क में रहती है। इनकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। ये अच्छी अनुवादक भी है। अनिल कुमार प्रभा अमेरिका में रहती है। वाईस ऑफ़ अमेरिका में संवाददाता के रूप में कार्यरत रही है। न्यूजर्सी में हिन्दी भाषा और साहित्य की प्राध्यापिका हैं। इनके लेखन में स्त्री की महत्वाकांक्षा तथा उसकी त्रासदी अंकित हुई है। इला प्रसाद

www.ignited.in

प्रौद्योगिकी से जुड़ी है। उनके लेखादि वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्हांेने इला नरेन नाम रचनाएं की है। उनके लेखन में लंदन में बसे हुए भारतीयो की पीड़ा का अंकन हुआ दिखाई देता है। उनकी "टेम्स का पानी" मेरे पासपोर्ट का रंग, कविताएं बहुत चर्चित रही है। कृष्ण बिहारी अबुधाबी में वरिष्ठ हिंदी अध्यापक हैं। इन्होने अनेक एंकाकी नाटक लिखें है। साथ ही निर्देशन भी किया है। उनके तीन उपन्यास और तीन गीत संकलन प्रकाशिक हुए हैं। स्पष्ट है कि प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है प्रवासी साहित्यकार भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत हैं। हम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभवों, भावनाओं, सवेदनाओं से जुड़ सकते है।

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी लंदन में भारतीय उच्चायुक्त रह चुके है। उनके वहां के कार्यकाल में हिंदी भाषा और साहित्यिक सृजन में काफी परिवर्तन हुआ। 2000ई. से वहां "हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के माध्यम से हिंदी के प्रति सजगता हुई है। उषा वर्मा लंदन के 'यॉक' में रहती है। उनके कविता संग्रह चार कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं साथ ही भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में अनेक रचनाएं छपी है।

अभिमन्यु अनन्त (मॉरेसिस) आदि ऐसे अप्रवासी साहित्यकार है। जिन्होने भारतीय संस्कृति को विदेशो में प्रचारित प्रसारित किया है। मेरा प्रस्तुत लेख अप्रवासी अभिमन्यु अनन्त के उपन्यासों पर केन्द्रीत है।

भारतीय सांस्कृति विरासत की परम्परा सुद्वीर्घ और पुरातन है। यह परम्परा किसी भी समाज की ऐसी जीवन पद्वति है जो पूर्वजो के अनुभवों से संयुक्त होकर पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में चलती रहती है। इसे मानव जाति की परम्परागत देन, सामाजिक उपार्जन उपलब्धि और समुदाय विशेष का ऐसा प्रवाह कहा जा सकता है। जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भविष्य से जोड़ता है। भारतीय संस्कृति के प्राण में एकतत्व है। उनके रक्त में सहानुभूति है यही कारण है कि आज इस देश में सहस्क्षातिधक समाज एक दूसरे को बाधा न पंहुचाते हुए भी अपनी विशेषताओ के साथ जीवित है। भारतीय संस्कृति ने सर्वदा समन्वय के रूप में समस्या का समाधान किया है। सभी को अपने साथ जोडा है। भारतीय संस्कृति में सत्य, अंहिसा सदभावना, मानवता, नैतिकता, त्याग, दयालुता आदि मूल्यो को प्रतिष्ठा है। यह समदर्शी, क्षमाशील और उदार है। "वसुधैव-कुटुम्बकम" इसका आदर्श रहा है। भारतीय संस्कृति के यह सभी मूल तत्व अभिमन्यु अनंत के उपन्यासों में यक्ष तत्र बिखरे हुए हैं डॉ. श्यामधर तिवारी लिखते है कि "मौरिशस" में भारत के उतरी एंव दक्षिणी दोनों भागों के निवासी गये हुए है। उनमें बिहारी भी है। तो गुजराती भी और तमिल भी है। तो महाराष्ट्री भी। इसी प्रकार हिन्दू धर्मी भी है। तो इस्लामी व ईसाई-धर्मी भी और हिन्दू धर्म में ही आर्य समाजी भी है तो वैष्णव एंव सनातन धर्मी भी वैविध्य के होते हुए भी अप्रवासी भारतीयो में भारतीय संस्कृति अन्तः सलिला की भांति प्रवाहित हो रही है।"

श्रीमति मंजु सारस्वत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में जीवन दर्शन इनमें भारत का अतीत गौरव और पर्व त्योहार सुरक्षित है। भारत का स्वर्णिय अतीत और भारतीय संस्कृति का अविभाज्य अंग है। वर्तमान की उपेक्षा हमारा विगत धन-धान्य एंव क्षद्वि सिद्वि सम्पन्न था। ऐश्वर्य का स्वर्ण जाल चारो और बिछा हुआ था। समृद्वि और उत्कर्ष का सूर्य कनक रश्मियों से भारत के ललाट को उन्नत किये हुए था। जहां तक दृष्टि जाती थी वसुधा का दूर्वा आंच पवन में झंकोरो से लहराता प्रतीत होता था। यह धरती राम कृष्ण की जन्म भूमि है। इसमें महाराजा अशोक और गौतम बुद्व की अंहिसा परमों धर्मा की चर्चा होती है। कालीदास और रविन्द्रनाथ ठाकुर के गीतो ने देश की महानता को व्यक्त किया हैं सुभाष और गांधी के बलिदान देश की जनता को स्वाधीनता की प्रेरणा देते है। शिवरात्रि के दिन "जम गया सरज" उपन्यास के नायक लालमन ने यह सब कुछ स्वामी जी के भाषण में सना तो उसके मन में "भारत दर्शन की अभिलाषा और तीव्र हो गई गुडिया पहाड़ा बोल उठा" उपन्यास में प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चुनाव की चहल पहल का वर्णन हैं अरूण एक प्रत्याशी है। जो मारदालबेर के राजपूतो का सम्बोधित करते हुए भारत के अतीत गौरव की याद दिलाता हुआ कहता है।

भारतीय संस्कृति अपनी समन्यवादी प्रवृति के कारण व्यापक और विशाल हैं। यह सदाचार, संयम, त्याग और गुणो से ओतप्रोत है। यह समाज कल्याण और विश्व बन्धुत्व की भावना से सरोकार है। नैतिकता और परोपकार इसकी नस-नस में व्याप्त है। नैतिकता संस्कृति की कुछ प्रमुख विशेषताओ का विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत है। भारतीय संस्कृति में "सत्य" दो अर्थो में प्रयुक्त होता है। एक ओर ज्ञानगत धर्म-विशेष की प्रामाणिकता के लिये तो दुसरी और विषयगत धर्म विशेष की वास्तविकता के लिये। पहले अर्थ में सत्य ज्ञान के मूल्य का घटक होता हैं। और बौद्विक पर्येषणा का साध्य, दूसरे अर्थ में सत्य स्वरूप मूल्य है अथवा नही, यह विचारणीय रहता है" अभिमन्यु अनंत ने अपने उपन्यासों में सत्य का प्रयोग स्थिति, घटना, चिन्तन आदि के रूप में किया है। गांधी जी बोले थे उपन्यास में मदन सोचता है।

गांधी जी की बातें एक बहुत बड़ी सच्चाई थी। यह सत्य था वह और उसे इस बात का दुख है कि वह बस्ती के चले आ रहे जीवन को अपना सत्य मान लेने को मजबूर था। मजबूर हो जाना उसकी अपनी मजबूरी थी गांधी जी को सुनने के बाद उसे अपने मान बैठे सत्य पर फिर से अविश्वास पैदा हो गया था उस लिजलिजेपन से भी जिन्दगी को जीते रहना न तो उसका अपना सत्य हो सकता था और न ही बस्ती का सत्य हो सकता था वह तो जो गांधी जी बोल गये थे। स्थिति को स्वीकार लेना सत्य नही हो सकता उसके अपने जेहन का अंधेरा झोपड़ी के गहन हो आए अंधेरे से टकराया, उसे गोबिद चंद्र पाण्डे टकराने से एक बिजली कौंधी तथा क्षणिक रोशनी में मदन गांधी जी के सत्य को देख पाया। वह सत्य था स्थिति में परिवर्तन लाने के लिये अपने को योग्य बनाना। अपने को योग्य बनाए बिना सत्य भी झूठ बनकर रह जाता है। इस उपन्यास में प्रकाश मुड़िया पहाड़ की तराई वाले गाँव की रामलीला में एक बार लक्षमण और दूसरी बार राम बनता है। वह राजा हरिशचन्द्र नाटक में हरिशचन्द्र की भूमिका निभाता है। तब उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उठता है और प्रेम सिंह से कहता है कि – "यह सत्यवाद तो अपन की समझ में नही आया। क्या यही वजह है कि हमारे लोग कुछ कर गुजरने से कहीं अधिक झेलते और सहते जाने में माहिर है" इस उपन्यास में अभिमन्यु अनत ने सत्य को भारतीयो की विवशता, बेबसी अत्याधिक सहनशीलता के परिप्रेक्ष्य में जांचने का प्रयास किया है। उन्हे भारतीयो की कायरता की अपेक्षा उनके संघर्ष में अधिक सत्य नजर आता है।

"लाल पसीना" उपन्यास के स्वामी जी सत्य की प्रतिमूर्ति हैं। वे गांव के लोगो को उनकी निर्धनता, शोषण, विवशता और बेबसी का अहसास दिलाते हैं। लोगो को प्रेरित करते हैं कि अपन चारो ओर के घटाटेप अन्धेरे को दूर करता है। वह कभी एक जगह टिककर नहीं रहते। लोगों को उनकी वास्तविक दशा की सच्ची पहचान देते हुए कहते हैं- "कलम" तुम्हें छोड़कर आगे जा रहा हूं। यह आगे जाना सदा मेरे जीवन का उद्देश्य रहा है। तुम्हे अपनी निजी पैरों पर खड़े रखता है। धूप, वर्षा और तूफान में भी सूरज उगता रहेगा और डूबता रहेगा पर एक दिन तुम सभी देखोगे एक ऐसा सूरज उदित होते जिसकी किरणे तुम्हारी सराहना करेंगी और तुम्हें छलने वाले तुम्हे दबाने वाले तुम्हारे सामने घुटने टेककर तुमसे क्षमा याचना करेंगे।

"और पसीना बहता रहा" उपन्यास में सहदेव ठाकुर हरि से कहते है कि- इस देश में जो इतिहास लिखे जाते रहे है उनमें पक्षपात ही पक्षपात है। इतिहास लिखने वाले या तो किसी के निर्देशन पर लिखते रहे हैं या खुद इतिहास की सच्चाई पर झूठ की परतें चढाते रहे है। "इन इतिहासों में भारतीय मजदूर की सही तस्वीर सामने नही लाई गई। यह इतिहास पूँजीपतियों, सरकारों, व्यापारियों तथा राजपालों की दुनिया का इतिहास है। यह सारे का सारा इतिहास झूठा इतिहास है। "हमें उसे सच्चे इतिहास की पुस्तके लिखनी है, जिनमें मजदूरी की संघर्ष गाथा पूरी ईमानदारी से लिखी गई हो।" हमें तो उन गलत इतिहासो का उतर इतिहास जीने वाले लोगो को ब्यानो से देना है।

"शब्द भंग" उपन्यास में लेखक ने रहीम की कविता के माध्यम से नशीली दवाओं का धंधा करने वाले इज्जतदार मौत के सौदागरों के आंतक की सच्चाई को व्यक्त किया है- "बच गया बचने वाला क्योंकि/अफीम सेवन से छलनी हुआ/उसका तन-बदन ही/उसके खिलाफ गवाह रहा/वह अधमरा ही अपने खिलाफ/सबूत रहा।

धर्म ग्रन्थों में अहिंसा परमो धर्म कहकर स्थान-स्थान पर अहिंसा के महत्व का प्रतिपादन किया गया है। दण्ड का कठोर विधान करने वाले कौटिल्य ने भी अहिंसा को मुख्य धर्म माना है- "अहिंसा लक्षणों धर्मः" तथा मनु ने पंच नीति सूत्रो में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है। महर्षि दयानंद भी अहिंसा को पर्म धर्म मानते हैं। संस्कार विधि में उन्होने अहिंसा को धर्म के लक्षण में गिना है। आर्य समाज मानता है कि "अहिंसा जहां दूसरो को सताना मना करती है वहां स्वयं दीर्घ जीवन प्राप्त करने की ओर भी प्रेरण करती है" अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में गांधीवादी अहिंसा के तत्व यत्र-बिखरे हुए मिलते है।

"लाल पसीना" उपन्यास में स्वामी जी जिस गांव में तीन दिन टिके थे वहां उन पर पत्थर फैंके गये थे। जमीदार ने उन्हें पाखण्डी कहा था। उन्हे अपनी तीन रातें एक बदनाम औरत के पास बितानी पड़ी थी। जब यह बातें बस्ती के नौजवानो को पता चलती है तो वे आपे से बाहर हो जाते है। वे उस गांव की ओर दौड़ जाने को तैयार हो जाते है जहां स्वामी जी का अपमान हुआ था लेकिन स्वामी जी उनके सामने आकर खड़े हो जाते है। नौजवान कहते हैं कि "स्वामी जी हम आपके अपमान का बदला लेंगे रहेंगे" लोगो का उबाल देखकर स्वामी जी कहते हैं- "बस अब जरा मुझे भी सुन लो। तुममें इसलिये प्रतिशोध की भावना जागी है क्योंकि तुम मुझे बेहद प्यार करते हो। यह बहुत अधिक प्यार कभी-कभार मानव को बेबस कर देता है। ऐसा प्यार केवल उससे किया जाता है जिससे कभी भी किसी भी हालत में बिछुड़ने की संभावना नहीं होती। यह प्यार उसी से किया होता। मुझे तो कल तुमसे बिछुड़ना होगा, उस समय तुम्हारी क्या हालत होगी। तुम हताश होकर अपने संकल्प को भूल जाओंगे" स्वामी जी के इन कथनों में

जहां विरक्ति के भाव हैं वहां प्रतिरोध की भावना से विलग होने वाली अहिंसा भी विद्यमान है।

"एक बीघा प्यार" उपन्यास में मानवीय सद्भाव के दर्शन होते है। उपन्यास की नायिका करूणा जब अपने बीत दिनों के बारे में सोचती है ता अनायास ही "कुछ धुंधली यादें झिलमिलने लगी। वे अभाव के दिन थे। मकई और कन्द पर गुजारा होता। उसकी मां और सोम की मां में बहुत बड़ी घनिष्ठता थी, इसलिये सोम की मां कभी-कभार उस के घर कुछ न कुछ छोड़ जाया करती थी" तंगी में किसी परिचिय व्यक्ति की मदद करना पारस्परिक सद्भाव के कारण ही सम्भंव हो पाता है।

"तीसरे किनारे पर" उपन्यास में अभिमन्यु अनत ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच सद्भाव को उठाते हुए लिखा है कि-"सहदेव सिंह एकदम धार्मिक प्रवृति के होते हुए भी फातमा के घर खाने में नही हिचकिचाते। यही बात फातमा के बाप दाउद की ओर से भी थी" अपनी-अपनी सीमा उपन्यास में सुमिया मौसी कहती है कि- "ईद-दीवाली हिन्दू और मुसलमान मिलकर मानते है" यह बात उनके परस्परिक सद्भाव का प्रतीक है।

"दार्शनिकता धरातल पर जिस एकत्व बोध को परम सत्य का साक्षात्कार कहा गया है, संस्कृति की धरातल पर उसे ही मानवता कहा जाता हे। संस्कृति इसी मनुष्यता की साधना में सहयोग देती है"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों- "दूसरो के साथ तादातत्य या एकत्व की अनुभूमि ही चरम मनुष्यता है।" यह मनुष्यता अभिमन्यु अनत के कथानक, पात्र, चरित्र-चित्रण और अनेक प्रसंग में व्यक्त हुई है। 'आन्दोलन उपन्यास की रमावती अपने जीवन की बहुत सी बातों को बोल सकती है क्योंकि भूल जाना उसका स्वभाव है लेकिन- "अपने बाप की एक बात को वह कभी नही भूल सकती। उसका बाप गांव का सबसे बड़ा रामायणी था। वह बात-बात पर यही कहता कि इस संसार को स्वर्ग बनाने के लिये अधिक नहीं, केवल दो छोटी चीजो की आवश्यकता है। थोड़ी सी अच्छाई और थोडा सा प्यार ओरो के लिये।

"एक बीघा प्यार" उपन्यास में जोगिया लछमण और उसके भाई हीरा के हरे-भरे खेत को उजाड़ देते है ऐसे में सुरेन के युवा आदोलनकर्ता मानवता के नाते "उसके खेत में दो तीन दिन काम कर नये पौधे उगाना चाहते और दूसरा चन्दा उगाह कर उसकी आर्थिक सहायता करना चाहते है।" यह सब उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचायक है।

भारतीय संस्कृति में चारित्रिक उच्चता को नैतिकता के अन्तर्गत परिणम किया जाता है। वह व्यक्ति जो संयमी है और परस्त्री गामी नहीं है, वह चरित्रवान और दूसरे शब्दों में नैतिक व्यकित है। "नैतिक शब्द मुख्यतः कर्म एंव शील का विशेषण है। कर्म और शील के विषय में सत् और असत् का विवेचन ही नैतिकता का मुख्य प्रश्न है। ये प्रश्न सदा और सर्वत्र महत्वपूर्ण रहे है और इनमें लौकिक एंव दार्शनिक चिन्तन का निकट संस्पर्श रहता है।

'अपनी ही तलाश' उपन्यास में सोमू किसी भी कीमत पर वासु को खोना नही चाहता। जब वासु किसी भी तरह उसके साथ काम करने को तैयार नही होता तो वह अपनी पत्नी उसे समर्पित करना है- "मोना ने पहले अपने बालों को खोला फिर ब्लाउज उतारा। पेटी कोट के नीचे लुढ़क जाने दिया। उसके सफेद ब्रेजियर भी नीचे को गिर गया.....। एकदम निर्वस्त्र होकर उसने अपने दोनों हाथों को आगे बढ़ा दिया।" स्त्री का इस स्थिति में देखकर कोई भी व्यक्ति फिसल सकता है, लेकिन वासु झटके से अपने हाथों को मोना के हाथों से छुड़ाता है और दरवाजे से बाहर हो जाता है। यह पुरूष की नैतिकता की चरम सीमा है।

त्याग यद्यपि व्यक्तिगण गुण होते हुए भी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह भाव एक ऐसी विशिष्टता लिये हुए है, जो मानव को समाज में आदर और प्रतिष्ठा दिलवाता है। किसी दूसरे के हित और कल्याण के लिये अपनी आवश्यक वस्तु का त्याग करना आदमी को अदामी के धरातल के उपर ले जाता है। त्याग करके वह दूसरों की नजरों में उंचा उठ जाता है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में अनेक पात्र इस श्रेष्ठ गुण से सम्पन्न हैं।

"जम गया सूरज" की सरस एक ऐसी पात्रा है जो अपने प्रेमी लालमन से आग्रह करती है कि वह अपनी पूर्व प्रेमिका भामा को अपना ले, क्योंकि यह उसका कर्तव्य है। लालमन कहता है कि वह सरस से प्यार करता है और भामा से उसका कोई सम्बंध नहीं है, लेकिन सरस का तर्क है- "भामा ठुकराकर वह बहुत बड़ा पाप करेगा। लालमन एकटक सरस को देखता रहता है" लेकिन सरस तो त्याग के पथ पपर आगे बढ़ चुकी थी। उसकी आंखो में एक संकल्प चमक रहा था। जब तक लालमन उसे समझता वह उससे बहुत दूर जा चुकी थी। पर नारी के लिये अपने प्रेमी का त्याग प्रेम की वेदी पर एक नारी का सबसे बड़ा त्याग है।

"पर पगडण्डी नहीं मरती" उपन्यास में विक्रम अंजू को बताता है कि सभा ने तय किया है कि बच्चो को पढ़ाने के लिये उसे

www.ignited.in

चालीस रूपये माहवार दिये जायेंगे। इस पर अंजू कहती है कि तब जो वह किसी भी हालत में बच्चो को नहीं पढ़ाएगी। विक्रम पूछता है क्यों? तो वह उतर देती है कि- "उस बैठका में मेरे बाप ने बीस साल से अधिक हिन्दी पढ़ाई है बिन एक पैसा लिये। मेरा भाई भी आज तक निःशुल्क पढ़ाता रहा। तुम चाहतें हो कि मैं उन दोनों के उस त्याग और पूजा को पैसे लेकर बेच दूं।"

दया मानव की निजी गुण है, लेकिन यह व्यक्तिगत गुण जब सामाजिक संदर्भो से जुड़ जाता है तो भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व बन जाता हैं। पराये के दुःख में द्रवित होना ही दया है। अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में अनेक ऐसे पात्र हैं जो अपने सम्बंन्धियों, पड़ोसियों अथवा जान-पहचान के लोगों के प्रति द्रवित होते है, उन पर दया दिखाते है।

'जम गया सूरज' उपन्यास में धरमेन खेत में काम करने वाले मजदूरो के प्रति दया के भाव रखता है। धरमेन की भाभी उसके मित्र लालमन से उसकी दयालुता के बारे में कहती है- "मजदूरो के अधिकारों की मांग लेकर वह घर में वकालत करता रहता है। पिछले ही सप्ताह से वह उन सभी को समय से दो घण्टे पहले ही छोड़ता आ रहा हे। पिछले ही सप्ताह तुम्हारे भाई ने उसे पैसे की जिममेदारी दे दी थी और यह कहते हुए कि मजदूरों का हक मारने से उसका दिल दुःखता है उसने बिना सोचे समझे सभी के पैसे बढ़ा दिए।"

"लहरों की बेटी" उपन्यास की दुलारी दया की प्रतिमूर्ति है। वह प्रत्येक जरूरमन्द की सहायता करती है। दया के कामों में विदुला भी अपनी छाप छोड़ती है।

भारतीय संस्कृति प्राणी मात्र की मंगल कामना चाहती है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्त निरामयाः।

सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा करिश्चद् दुःख भागभवेत् ।।

अर्थात सभी सुखी रहें, सभी कल्याण के दर्शन करें और किसी को भी कोई दुःख प्राप्त ना हो। इस तरह से परोपकार के अन्तर्गत अपनी सामथ्र्याअनुसार दूसरे प्राणियो के लिये तन, मन और धन से सहायता करने का विधान निहित है। सब मनुष्यों के दुराचार, दुःख छूटे, श्रेष्ठाचार और सुख बढ़े, उसके करने को परोपकार कहा जाता है।

अभिमन्यु अनत के उपन्यासो के अनेक ऐसे पात्रो को चित्रण है जो परोपकार की भावना से ओत-प्रोत है। "लाल पसीना" उपन्यास का 'किसन' परोपकार की भावना से लबालब भरा हुआ पात्र है। इस उपन्यास के मजदूर लंगड़वा साहब के खेतों से ईख काट रहे थे। दाउद ईख को तीन इंच छोड़कर काट रहा था। सिसे मालगासी सरदार ने उसकी पीठ पर गन्ने से दो जोरदार वार किये लेकिन "गठीले शरीर का दाउद इस तरह से काम में लगा रहा जैसे गन्ने के प्रहार का उसके शरीर पर खास असर ही नही था। किसन ने मार की पीड़ा को कुन्दन के चेहेरे पर देखा, अपने भीतर अनुभव किया और दूसरे सरदार को आते देख ईख काटने में लग गया।" लेकिन सभी दोनो सरदार लंगड़वा साहब के साथ दूर चले गये। उन दोनों के चले जाने बाद किसन ने जल्दी से छलांग मारकर दाउद के पास पंहुचते हुए कहा, "कुछ देर के लिये तुम उधर बैठ जाओ।..... अपनी सारी फुर्ती के साथ कोई तीन चार गज तक गन्नों को काट चुकने के बाद जब उसने देखा कि दाउद की कतरा भी बाकी लोगों तक पंहुच गई थी तो फिर बिना कुछ कहे वह जल्दी से अपनी कतार को लौट गया।"

किसी सीमा तक सहनशीलता होना भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ी विशेषता मानी गई है। अभिमन्यु अनत के कथा-साहित्य में यह विशेषता यत-तत्र घटनाओं और प्रसंगों में बिखरी मिलती है। 'गांधी जी बाले थे' उपन्यास में जब गोरे मालिकों के जुल्म और अत्याचार भारतीय कुली मजदूरो पर बहुत बढ़ जाते है तो मदन और परकाश मजदूरो का संगठित करने का प्रयास करते है। वह दोनो गोरे मालिकों के लिये एक चुनौती बन जाते हैं। एक बार जब यह मजदूरों को जागृत करने के लिये अन्य बस्ती में जा रहे होते है तो रास्ते में उन्हे रोककर धमकाया गया। मदन के सिर से रूमाल उतारकर और उसमें एक छोटा सा पत्थर बांधने के बाद उसे देवदारू के पेड़ पर उठाल दिया गया। परकाश की फतुही को उसके बदन से उतारकर गुद्दी-गुद्दी कर दिया गया। रास्ते में जमा बरसात के पानी के बीच से कीचड़ उठाकर दोनों-दोनों के चहेरों पर पोत दिया गया। पर दोनों रूके नही, चलते रहे । परकाश को बार-बार गांधी जी की एक कही बात याद आ रही थी- हद तक सह जाने की शक्ति बहुत बड़ी शक्ति होती है।

भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृतियों को अपने में समाहित कर अपनी शक्ति को बढ़ाया है। यह संस्कृति महासागर के समान है जिसमें अनेक नदियां आकर विलीन होती रही है। इसमें एकीकरण और समन्वय की अपार ताकत है। सत्य, अहिंसा, सद्भाव, मानवता, नैतिकता, त्याग, दयालुता, परोपकार, सहनशीलता आदि गुण इसे महान बनाते है। इस संस्कृति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्शो की स्थापना की है। सभी प्राणियों पर दया, सभी धर्मों का आदर करते हुए यह संस्कृति विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है। यह आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण धर्म परायण संस्कृति है।

संदर्भ

1. अतर्वंशी उषा प्रियंवदा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
2. आप्रवासी मंजु कपूर, रैण्डम हाउस इंडिया, नोएडा, 2009
3. उड़ने से पेशतर महेन्द्र भल्ला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
4. गाथा अमरबेल की सुषम बेदी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2015
5. दिशाएँ बदल गई नरेश भारतीय, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2014
6. पथरीला सोना रामदेव धुरंधर, हिंदी बुक सेण्टर, नई दिल्ली, 2012
7. पूछो इस माटी से रामदेव धुरन्धर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012
8. रुकोगी नहीं राधिका उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
9. लौटना सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 2011
10. सात पेफरों से धेखा कमलेश चैहान, यूनिस्टार बुक्स, चंडीग
11. हवन सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 2010
12. त्रोइगा योगेश वुफमार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

Corresponding Author

Dr. Seema Devi*

M.A., M.Phil, Ph.D., Assistant Professor Department of Post Graduate, Madhav University Pintuwara, Sirohi, Rajasthan